International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(I), October - December, 2023, pp. 95-99

उत्तर आधुनिक युग में कला का बदलता स्वरूप

डॉ. कृष्णा महावर*
हेमन्ता मीणा**

सार

उत्तर आधुनिकता को विचार या दर्शन से अधिक एक प्रवृति का नाम दिया गया है। बीसवीं शताब्दी के अंत में जैसे ही उत्तर आधुनिकता का प्रवेश जीवन के समस्त क्षेत्रों में होता है, मनुष्य इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। उत्तर आधुनिकता के प्रमुख संस्करणों के रूप में उत्तर संरचनावाद, नवमार्क्सवाद, नवव्यवहारवाद व फेमिनिज्म आदि को जाना जाता हैं। औद्योगिकीकरण, भूमंडलीकरण, उदारीकरण, पूंजीवाद आदि कारकों ने समाज में उत्तर आधुनिकता को बढ़ावा दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिवर्तन देखने को मिले। इसके साथ ही कला व साहित्य जैसे क्षेत्रों में भी बदलाव आए। साठ के दशक के बाद की कला को 'प्रयुक्त वादी' कला कहा जाने लगा। अमेरिका कला का नया केंद्र बिंदु बन गया जहां आधुनिक कला से हटकर कला आंदोलनों का जन्म हुआ। ये आंदोलन उत्तर आधुनिक कला के रूप में विकसित होने लगे। पश्चिमी देशों में कला जगत में जो भी बदलाव आ रही थे, उसका संकुचित प्रभाव भारतीय कला पर भी पड़ रहा था। कला में अभिव्यंजना में नवीन प्रवृत्तियों के दर्शन, अब कला प्रयोगात्मक को त्याग कर रचनात्मकता की ओर अग्रसर हो गई।

शब्दकोश: *उत्तर आधुनिकता, उत्तर संरचनावाद, नवमार्क्सवाद, नवव्यवहारवाद, फेमिनिज्म, औद्योगिकीकरण, भूमंडलीकरण, उदारीकरण, पूंजीवाद, प्रयुक्तवादी।*

प्रस्तावना

उत्तर आधुनिकता, जिसे आधुनिकता की अगली कड़ी व पश्चिमी देशों की देन के रूप में जाना जाता है। जिसकी उत्पत्ति फ्रांस से मानी जाती है। इसको प्रचलन में लाने का श्रेय अंग्रेजी साहित्य को जाता है जिससे आगे चलकर हिंदी साहित्य में भी प्रचलित हुआ फ्रांसीसी विद्वान फ्रांस आल्योतार ने एक रिपोर्ट जिसे '**द पोस्ट मॉडर्न कंडीशन : एक रिपोर्ट ऑन नॉलेज**' प्रकाशित हुई। जिसमें इसके लिए '**पोस्टमॉडर्न**' शब्द प्रयुक्त हुआ बाद में इसे हिंदी में उत्तर आधुनिकतावाद के नाम से जाना जाने लगा। यह मूल्यों का ह्रास करने वाली मानव केंद्रित विचारधारा है। उत्तर आधुनिकता का जन्म एकदम से नहीं हुआ आधुनिकता के कई कारकों ने ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जिससे उत्तर आधुनिकता का उद्भव हुआ। उत्तर आधुनिकता के संबंध में विद्वानों के विचार एक मत नहीं है सबके अपने–अपने विचार है जिससे उत्तर आधुनिकता को लेकर भ्रम की स्थिति बनी हुई है।

सुधीश पचौरी के अनुसार "समाज उत्तर आधुनिक स्थितियों में दाखिल हो चुका है हमारे अनुभव उत्तर आधुनिक बना रहे हैं हमारी बहसों में अचेत रूप से हमारे बदलते हुए जगत के चित्र आने लगे हैं" (दोषी, पृ. 152)।

---

* असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोधार्थी, चित्रकला विभाग, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

आधुनिकता को 20वीं शताब्दी के मध्य तक ही माना जाता है, उसके बाद की स्थिति को उत्तर आधुनिक के रूप में परिभाषित किया गया है। उत्तर आधुनिकता ने समाज की दशा और दिशा ही बदल दी इसने एक नई संस्कृति को जन्म दिया। नई – नई तकनीक का विकास होने से कला, साहित्य, फिल्म आदि बाजार की मांग के अनुसार काम करने लगे जिसने बाजारवाद की धारणा को बढ़ाया हैं। उत्तर आधुनिक काल में वस्तुओं का क्रय–विक्रय सुलभ हो गया कोई भी वर्ग या व्यक्ति इससे अछूता नहीं रहा। यह आधुनिकता के पहलुओं व स्वायत्तता को चुनौती देती है। यह व्यवस्थाओं को शाश्वत नहीं, लेकिन सिर्फ एक तरह की व्यवस्था को नहीं मानती इसकी नजर में मनुष्य ही इन व्यवस्थाओं का जनक है। उत्तर आधुनिकता ने दलित व नारीवादी जैसे मामलों पर प्रकाश डाला जो उपन्यास, कला के भेद को खत्म करते हैं वही उत्तर आधुनिक उपन्यास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जॉन मैकगोवान ने अपनी पुस्तक **'पोस्टमॉडर्नाइज्म एण्ड इट्स क्रिटिक्स**' में एक जगह लिखा है कि उत्तर आधुनिकतावाद एक ऐसी फिसलनदाबू पदावली है कि हम उसे आसानी से स्थिर नहीं कर सकते। वह शिक्षण संस्थानों में तेजी से पनपती सिद्धांतकी है या वह महानगरों, उपनगरों का स्थापत्य है या वह सलमान रश्दी या गैब्रिल गार्सिया मार्केस या एंजेल्स कार्टर के नए उपन्यासों के रूप में हैं (पचौरी, पृ.13–14)।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सभी देशों में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन देखने को मिले इसके साथ ही कला के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि देखने को मिली। द्वितीय विश्व युद्ध तक आते–आते कला में मनोवैज्ञानिक प्रभाव दिखाई देने लग गये। इन मनोवैज्ञानिक के कारणों से मानव जीवन भी प्रभावित हुआ। इससे कला को वैश्विक मंच प्रदान हुआ कला में अभिव्यंजना व नवीन प्रवृत्तियों के दर्शन हुए। अब कला प्रयोगात्मकता को त्याग कर रचनात्मकता की ओर अग्रसर हुई। इसके फलस्वरुप कला में आंदोलन की उत्पत्ति होने लगी। ये आंदोलन उत्तर आधुनिक कला के रूप में विकसित होने लग गए। कला में प्रयोग के माध्यम से कला का विकास अनवरत होता रहता है। परंपरागत माध्यमों से भी कला में अभिव्यक्ति हो रही थी लेकिन फिर भी कलाकारों को समय के साथ ऐसी स्थिति महसूस हुई। जिससे नए माध्यमों का प्रयोग आरंभ हुआ रंगों से शुरू होकर वस्तुओं का प्रयोग व वर्तमान में कलाकार अपने शरीर के प्रयोग करके कलाकृति बन जाता है। चित्रकला, नृत्य व संगीत कला में स्वायत्त टूटती है तो उत्तर आधुनिक उसमें अवरोध उत्पन्न करती है उत्तर आधुनिकता यथार्थ व मानवतावाद पर भी प्रश्न चिन्ह लगती है। उत्तर आधुनिक विचारात्मक कला हैं।

यूरोपीय कला आंदोलन के बाद जहां कला में अनेक आंदोलन विकसित होकर समाप्त हो चुके थे। दूसरी और इन्हें आंदोलन से प्रेरणा लेकर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व स्तर पर उत्तर आधुनिकतावाद की अनेक प्रवृत्तियां देखी जा सकती है। अब अमेरिका कला आंदोलनों का नया केंद्र बिंदु बन गया। अमूर्त वस्तु निरपेक्ष या एक्शन पेंटिंग जैसे आंदोलन ने कला में क्रियाशीलता को बढ़ाया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कलाकारों ने अपने अचेतन से कला को नईं परिभाषा दी। उत्तर आधुनिक शब्द का प्रयोग 1950 के दशक में स्थापत्य में देखा जा सकता है बाद में अन्य क्षेत्रों में भी इस पर चर्चा होने लगी। तत्कालीन भवन निर्माण प्रक्रिया में ब्लॉकनुमा, गगनचुंबी इमारतें, अपार्टमेंटस और सरकारी दफ्तरों के लिए भवन निर्माण प्रारंभ हुआ। इन इमारत में शीशा, कंक्रीट और इस्पात के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया जो कि आधुनिक वास्तुकार नहीं करते थे। चार्ल्स जेनक्स का नाम सबसे पहले उत्तर आधुनिक वास्तुकार के रुप में प्रसिद्ध हैं। 1960 के दशक तक कला में हुए प्रयोग के कारण इसे **'प्रयोगवादी कला**' से नवाजा गया 1960 के दशक तक कला में जो अनगिनत प्रयोग हुए उन्हें प्रयुक्त करने की बारी थी। 1960 के बाद की कला को '**प्रयुक्तवादी**' या **'उत्तर आधुनिक कला**' कहते हैं।

ओल्डनबुर्ग के कथन में ''मैं ऐसी कला को चाहता हूं जो कंघा करती है, कानों से लटकती है होठों और आंखों में लगाई जाती है" (साखलकर, पृ. 301)।

कला को समाज से जोड़कर देखा जाने लगा। कला और समाज एक दूसरे से संबंधित है। युग युगांतर की संस्कृति व सभ्यता को कला के द्वारा ही व्यक्त किया जा सकता है। क्योंकि समाज में जो भी परिवर्तन आते हैं, उन्हें कला के द्वारा ही अभिव्यक्त किया जा सकता है। कलाकार समाज में जो देखता है,

अनुभव करता है उसे कला के द्वारा व्यक्त करता है। कलाकार व दर्शक मिलकर कलाकृति का निर्माण करने लगे, दर्शक उस कला कार्य का हिस्सा बन गया। कला में हुए परिवर्तनों से कला को प्रदर्शित करने के तरीके में भी बदलाव आ गया। पहले जहां कलाकृतियां सिर्फ गैलरियों में ही प्रदर्शित होती थी लेकिन अब सारे सार्वजनिक स्थान ही उसको प्रदर्शित करने का माध्यम बन गये। कला सीमाओं के बंधनों से मुक्त हो गई। कलाकृतियों को प्रदर्शित करने के साथ–साथ उसमें ललित कला के अन्य माध्यमों का भी प्रयोग होने लग गया जैसे संगीत, वीडियो का प्रदर्शन होने लग गया।

उत्तर आधुनिक संस्कृत गठबंधन का अंत है जिसे बुर्जुआ समाज ने गैलरी में म्यूजियम में अक्षुण्ण रखा है। इसे कला के संदर्भ में वर्तमान का महत्व नष्ट प्राय, हो रहा है। इसने सौंदर्य सिद्धांत कला इतिहास व आलोचना को एकाएक परिवर्तित कर दिया है तथा कला को समस्त सीमाओं व परिभाषाओं से परे ले गया है। उत्तर आधुनिकता सृजन प्रक्रिया व सामग्री प्रयोग की कुशलता के प्रति अधिक एकाग्र है। इसमें सृजन प्रक्रिया व सामग्री प्रयोग महत्वपूर्ण है तथा प्राप्त परिणाम व पदार्थ गौण है। (चतुर्वेदी,पृ.155)।

वर्तमान में कला में जो प्रयोग देखने को मिल रहे हैं। यह प्राचीन काल शैलियों से अलग दिखाई देते हैं इनकी शुरुआत पश्चिम में देश से मानी जाती है। इन कला शैलियों को लोग प्रश्न चिन्हित करते हैं या कुछ लोग इसके पीछे भाग रहे हैं इन सबको तो पश्चिम में कला शैलियों का रूप दे दिया गया है। जबकि हमारे देश में यह स्थितियां पहले से ही मौजूद थी लेकिन इन्हें कला के रूप में शायद देखा जाता था। तकनीक के बढ़ते प्रयोग ने कला में विविधताओं को जन्म दिया और कलाकार अपने स्वतंत्र शैली में कार्य करने लगे। वह कला समाज की जगह व्यक्ति केंद्रित होने लग गई मौलिकता के कारण कला में विकृतियां पैदा होने लग गई।

मार्शल धुंशा द्वारा न्यूयॉर्क में प्रदर्शनी में 'मूत्रपाट' को 'फव्वारा' शीर्षक से प्रदर्शित किया गया तो उसका विरोध हुआ। उनका कथन था की कलाकृति की रचना कैसे हुई यह जरूरी नहीं उसका विचार जरूरी है। इसके बाद कला क्षेत्र में ऐसे अनगिनत प्रयोग होने लग गए जिसने कला के परंपरागत कला रूपों को जर्जरित करने का काम किया। इन्हीं प्रयोगों से आगे चलकर पश्चिमी जगत में अनेक आंदोलनों का जन्म हुआ। इन्हीं आंदोलन से प्रभावित होकर भारत में अनेक कलाकार इस तरह के प्रयोग से कला में अभिव्यक्ति दे रहे थे। आज की यह कला यात्रा परंपरागत कला से भिन्न है। 80 के दशक में भारतीय कला परिदृश्य में परिवर्तन हो रहे थे इस युग में कलाकार एक नई दृष्टि से शैलियों की अभिव्यक्ति कर रहा था। वह अपनी अभिव्यक्ति में निजी प्रतीको, फंतासी तथा रहस्यवाद के प्रयोग पर बल दे रहा था। भारतीय कला में पहले परंपरागत कला रूपों का ही दर्शन होता था लेकिन उदारीकरण की नीति के बाद वैश्वीकरण होने से अंतर्राष्ट्रीय कला रूपों का भी दर्शन होने लगा। इससे भारत में इंस्टॉलेशन, परफॉर्मेंस आर्ट जैसे कला रूपों का भी प्रयोग आरंभ हो गया। इन माध्यमों से कलाकार की अभिव्यक्ति का दायरा बढ़ गया जिससे नए–नए प्रयोग सामने आए। भूपेन कक्कर, नलिनी मालानी, अर्पिता सिंह, नीलिमा शेख जैसे उत्तर आधुनिक कलाकार के रूप में जाने जाते हैं। भारत में हो रहे त्रिनाले जैसे आयोजन कला में प्रयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। कला में देखे जाने वाले इंस्टॉलेशन, वैचारिक कला, डिजिटल कला के प्रयोग ने कला जगत को नवीन आयाम तक पहुंचाने का काम किया है। भारतीय कला के संदर्भ में देखा जाए तो कलाकारों ने पश्चिमी कल के कुछ प्रयोगों को अपनी कला में आत्मसात किया है।

उत्तर आधुनिक युग में कला की कुछ प्रमुख नवीन प्रवृत्तियां देखी गई जिनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं –

- **वैचारिक कला** – इसे प्रत्ययवादी कला के नाम से भी जाना जाता है वैचारिक के कला दादावादी आंदोलन के गुणों को ग्रहण करके विकसित हुआ। प्रत्यवादी कला में कलाकृति के अर्थ संदर्भ में स्वतंत्रता है। 20वीं शताब्दी के आंदोलन का सारांश वैचारिक कला को माना जाता है। इसने कला को देखने व समझने के नजरिया को बदल दिया।
- **इंस्टॉलेशन आर्ट** –इस आंदोलन की शुरुआत भी अन्य आंदोलन की तरह ही 1960 के दशक के बाद हुई। यह फोटोग्राफी, मूर्तिकला, रंगमंच का मिश्रित रूप है। यह मूर्ति कला से मिलती–जुलती त्रियायामी

कला हैं। समय व स्पेस को प्रमुख तत्व माना गया। एलन केपरो, वोल्फ वोसेल इसके प्रमुख कलाकार माने जाते हैं। इसको स्थाई रूप में रखना, क्रय–विक्रय करना मुश्किल है। इस आंदोलन की जड़े भी दादावाद में देखी जा सकती है। भारतीय परिदृश्य में स्थापना काल शुरुआती दौर में हुसैन के कुछ कार्यों में देखी जा सकती हैं। स्थापना काल की जड़े भारत में पारंपरिक अनुष्ठानों व लोक में दिखाई देती है। इसमें म्यूजिक व वीडियो का भी प्रयोग होता है। भारत में विवान सुंदरम, तेजल शाह, शिल्पा गुप्ता, नलिनी मालानी इसके प्रमुख कलाकार हैं।

माइ मदर एंड मी (सुबोध गुप्ता) 2006

- **वीडियो आर्ट** – वीडियो आर्ट कला के क्षेत्र में श्रव्य व दृश्य माध्यमों में प्रयोग होने वाली विधा है। जो 1960 में अस्तित्व में आई । वीडियो आर्ट का प्रयोग आज इंस्टॉलेशन और परफॉर्मेंस माध्यमों में किया जा रहा है। पॉप कलाकार एंडी वारहोल व जुइन पाइक इसके प्रतिष्ठित कलाकार है ।
- **लैंड आर्ट** – कला की शुरुआती प्रकृति की सानिध्य में हुई थी आज विश्व में पर्यावरण को बचाने के लिए जो कदम उठाए जा रहे हैं। उनमें कलाकार की भी अपनी कला द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इस कला में प्रकृति से जुड़ी व प्राप्त हुई सामग्री का उपयोग किया जाता है।
- **परफॉर्मेंस आर्ट** – परफॉर्मेंस आर्ट जिसे ललित कला का ही एक रूप माना जाता हैं यह 1970 से इसकी शुरुआत मानी जाती हैं। यह समय आधारित दर्शकों के सामने प्रस्तुत की जाने वाली कला हैं । इसमें स्क्रिप्ट का प्रयोग किया भी जा सकता हैं और नहीं भीं। यह एकाएक या योजना के आधार पर भी प्रस्तुत की जा सकती हैं। इसमें एकल या समूह के द्वारा भी परफॉर्मेंस दी जा सकती हैं। इसमें चार तत्वों को प्रमुखता दी गयी हैं जिनमें समय, स्पेस, कलाकार और उसका शरीर।

ताईवान में भारत माता (श्वेता भटटड़)

निष्कर्ष

उत्तर आधुनिक युग से पहले परंपरागत माध्यमों में ही काम करते देखा जा सकता हैं। लेकिन दादावाद व दिवितिय विश्व युद्ध के बाद की जो परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं उनसे कला में वैचारिक बदलाव आयें। जिससे कलाकार के साथ–साथ दर्शक भी कला में शामिल होकर उसका हिस्सा बन गया। यह इसलिए संभव हो पाया क्योंकि कला में आम वस्तुओं का भी प्रयोग होने लगा। हम कला की बात करे, यदि कला में प्रयोग और नवाचार नहीं होंगे तो कला का विकास रुक जाएगा। कला में नवीन माध्यमों के प्रयोगों से वह गतिशील रहती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, निशा. कला की पाश्चात्य अवधारणा, नई दिल्ली : विश्व भारती, 2018. पेज –162–163.
2. दोषी, एस.एल. आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव – समाजशास्त्रीय सिद्धान्त. नई दिल्ली : रावत प्रकाशन,2002. पेज–133,151,152.
3. पचौरी, सुधीश.उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, तृतीय संस्करण 2005. पेज 13 – 14
4. साखलकर, र.वि. आधुनिक चित्रकला का इतिहास. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2017. पेज – 300,301,302
5. चतुर्वेदी, ममता. यूरोप की आधुनिक कला. जयपुरः हिन्दी ग्रंथ अकादमी, छठा संस्करण 2022. पेज – 141,142,154,155.
6. यादव, विवेक कुमार. "उत्तर आधुनिकता : नई सामाजिक दृष्टि का उदय". अपनी माटीः अंक 37, 2021.
7. कासलीवाल, मीनाक्षी. ललितकला के आधारभूत सिध्दांत. जयपुर : हिन्दी ग्रंथ अकादमी,2018. पेज– 183
8. मागो, प्राणनाथ. भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य. नई दिल्लीः नेशनल बूक ट्रस्ट, इंडिया, 2006. पेज –106
9. महावर, कृष्णा. न्यू आर्ट ट्रेंड्स. जयपुरः हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2015. पेज– 45

❖◆❖